सेर्गेई अक्साकोव
लाल फूल
रादुगा प्रकाशन
मास्को

सेर्गेई अक्साकोव

लाल फूल

अनुवादक : योगेन्द्र नागपाल

रादुगा प्रकाशन
मास्को
पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५
राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

बहुत पहले की बात है, सात समुद्र पार, नदियों-पर्वतों के पार एक व्यापारी रहता था, बहुत ही धनी और नामी व्यापारी।

उसके पास अपार धन-दौलत थी, देश-विदेश की भांति-भांति की वस्तुएं थीं, हीरे-मोतियों और रत्नों से, सोने-चांदी से उसका खज़ाना भरा हुआ था। और उस व्यापारी की तीन बेटियां थीं, तीनों बड़ी ही सुंदर, और सबसे सुंदर थी छोटी बेटी।

एक बार वह व्यापारी सात समुद्र पार, परदेस में व्यापार के लिए जाने को तैयार हुआ। अपनी प्यारी बेटियों को बुलाकर उसने कहा:

"सुनो मेरी प्यारी बेटियो, मेरी सुंदर, गुणवती बेटियो, मैं व्यापार करने जा रहा हूं, मेरे पीछे तुम मिल-जुलकर भली लड़कियों की भांति रहना। और
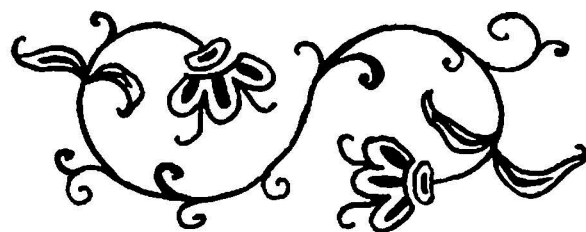
मैं तुम्हारे लिए जो तुम चाहोगी, वही सौगात लाऊंगा। तुम्हें तीन दिन का समय देता हूं, तीन दिन बाद मुझे बताना कौनसी सौगात चाहती हो।"

तीन दिन, तीन रात तक बेटियां सोचती रहीं और फिर अपने पिता के पास आईं और वह उनसे पूछने लगा कि वे कौनसी सौगात चाहती हैं। बड़ी बेटी ने पिता के सामने शीश नवाया और बोली:

"परम पूज्य मेरे पिता जी! आप मेरे लिए ज़री और कीमखाब के वस्त्र नहीं लाना, काले साइबेरियाई सेबल की अमूल्य खालें नहीं लाना, न ही बसरे के मोती लाना, मेरे लिए बस रत्नों से जड़ा सोने का मुकुट लाना, और उन रत्नों की चमक ऐसी हो जैसे पूर्णिमा की ज्योत्स्ना, जैसे दिवाकर की लाली, और अमावस की रात में भी उस मुकुट से दिवस सा उजाला हो।"

भला व्यापारी सोच में पड़ गया और फिर बोला:

"सुनो मेरी प्यारी बेटी, मेरी सुंदर और गुणवती बेटी, मैं तुम्हारे लिए ऐसा मुकुट ले आऊंगा। समुद्र पार की एक रानी के पास ऐसा मुकुट है और वह मुकुट तहखाने में बंद है, और तहखाना ऊंचे पहाड़ में है, तीन फ़ौलादी दरवाज़ों के पीछे, तीन तालों के पीछे बंद है। उसे पाना आसान न होगा, पर मेरे खज़ाने के लिए कुछ भी असम्भव नहीं।"

मंझली बेटी ने पिता के आगे शीश नवाया और बोली:

"परम पूज्य मेरे पिता जी! आप मेरे लिए ज़री और कीमखाब के वस्त्र नहीं लाना, काले साइबेरियाई सेबल की अमूल्य खालें नहीं लाना, न बसरे के मोती और न ही रत्नों से जड़ा मुकुट लाना, मेरे लिए तो बिल्लौरी कांच का वह दर्पण लाना, जिसमें मुझे सारे लोक के सौंदर्य के दर्शन हों और जिसे देख-देखकर मेरा रूप घटे नहीं, बढ़ता ही जाये।"

भला सौदागर सोच में पड़ गया और सोचकर उसने कहा:
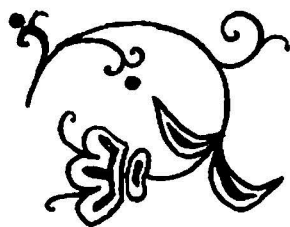
"अच्छी बात है, मेरी प्यारी बेटी, मेरी सुंदर, गुणवती बेटी, मैं तुम्हारे लिए ऐसा दर्पण ले आऊंगा; है ऐसा दर्पण फ़ारस के बादशाह की बेटी के पास और बंद है वह ऊंचे महल में, सात फ़ौलादी दरवाज़ों के पीछे, सात तालों के पीछे, और वह महल ऊंचे पहाड़ पर है, और महल तक तीन हज़ार सीढ़ियां जाती हैं, हर सीढ़ी पर नंगी तलवार उठाये सिपाही रात-दिन पहरा देते हैं, और फ़ौलादी दरवाज़ों की चाबियां भी राजकुमारी अपनी करधनी में बांधे रहती है। तुम्हारा काम अधिक कठिन है, पर मेरे खज़ाने के लिए कुछ भी असम्भव नहीं।"

छोटी बेटी ने पिता के आगे शीश नवाया और बोली:

"परम पूज्य मेरे पिता जी! आप मेरे लिए ज़री और कीमखाब के वस्त्र नहीं लाना, काले साइबेरियाई सेबल की अमूल्य खालें नहीं लाना, बसरे के मोती नहीं लाना, न रत्नों से जड़ा मुकुट और न बिल्लौरी दर्पण लाना, मेरे लिए तो बस छोटा सा लाल फूल लाना, ऐसा फूल, जिससे सुंदर सारे संसार में और कोई न हो।"

भला व्यापारी पहले से भी गहरी सोच में पड़ गया। बहुत देर तक सोचता रहा, फिर अपनी लाड़ली छोटी बेटी को दुलारने, प्यार करने लगा और कहने लगा:

"तुमने तो दोनों बहनों से कठिन काम सौंपा है: अगर पता हो क्या ढूंढ़ना है, तो ढूंढ़ ही लिया जाये, पर वह चीज़ कैसे ढूंढ़ूं, जिसका पता ही नहीं? लाल फूल ढूंढ़ना तो मुश्किल नहीं, पर यह मैं कैसे जानूंगा कि उससे सुंदर और कोई नहीं? मैं कोशिश करूंगा, पर सौगात न मिली, तो पिता पर नाराज़ न होना।"

सो व्यापारी समुद्र पार के जाने-अनजाने देशों की यात्रा पर चल दिया।

बड़ी बेटी की मनचाही सौगात उसने ढूंढ़ ली: रत्नों से जड़ा मुकुट, जिससे अंधेरी रात में भी दिन जैसा उजाला होता था। मंझली बेटी की मनचाही सौगात भी उसने ढूंढ़ ली: बिल्लौरी दर्पण, जिसमें सारे लोक के सौंदर्य के दर्शन होते हैं, और जिसे देखकर युवती का रूप घटता नहीं, बढ़ता ही है। बस छोटी बेटी की मनचाही सौगात: ऐसा लाल फूल, जिससे सुंदर संसार में कोई दूसरा न हो, उसे कहीं नहीं मिल रहा था।

राजाओं-महाराजाओं, सुल्तानों और बादशाहों के महलों में उसने एक से एक सुंदर फूल देखे, पर यह विश्वास उसे कोई नहीं दिला सका कि उससे अधिक सुंदर फूल और कहीं नहीं है। व्यापारी दूर ही दूर जाता जा रहा था, रेतीले मैदानों के पार, घने जंगलों के पार। ऐसे ही एक दिन वह अपने वफ़ादार नौकरों के साथ जा रहा था कि अचानक लुटेरों ने उस पर हमला कर दिया। मुसीबत आई देखकर भले व्यापारी ने अपनी मालों से लदी गाड़ियां अपने वफ़ादार

नौकरों के पास छोड़ीं और घने जंगल में भाग गया – यह सोचकर कि लुटेरों का बंदी बनने से तो अच्छा है जंगली जानवर मुझे खा जायें।

अब वह उस घने-बीहड़ जंगल में भटकने लगा, पर ज्यों-ज्यों आगे चलता जाता, त्यों-त्यों रास्ता अच्छा होता जाता, बड़े-बड़े पेड़ मानो एक ओर को हट जाते, घनी झाड़ियों में रास्ता बन जाता। भला व्यापारी आश्चर्यचकित हो रहा था, बहुत सोचने पर भी उसकी कुछ समझ में न आता कि यह क्या अजूबा हो रहा है, पर वह चलता जाता और उसके पांवों तले रास्ता खुलता जाता। सुबह से शाम तक वह चलता गया, चलता गया, और उसके चारों ओर ऐसा सन्नाटा था, मानो कहीं कोई जीव नहीं, कोई जंतु नहीं। आखिर काली रात घिर आई, चारों ओर घटाटोप अंधेरा हो गया, पर उसके पांवों तले उजाला था। चलते-चलते आधी रात हो गई और तब उसे सामने दूर कहीं आसमान लाल होता दिखा। जितनी आगे वह चलता जाता, उजाला उतना ही बढ़ता जाता, और इतना प्रकाश हो गया, जैसे दिन चढ़ आया हो। आखिर वह
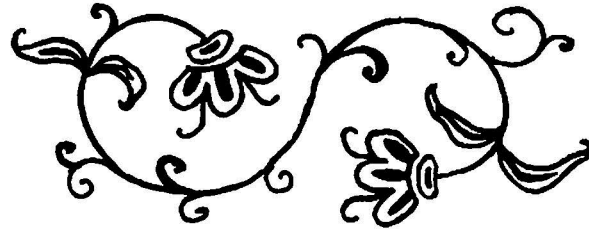
एक खुले मैदान में पहुंचा। देखता क्या है कि उस मैदान के बीचोंबीच जगमग-जगमग करता महल खड़ा है, सोने-चांदी और रत्नों से सजा महल। कहीं कोई बत्ती जलती न दिखती थी पर महल जगमगा रहा था, लाल सूरज सा चमक रहा था, उधर देखते आंखें चकाचौंध होती थीं। महल की सारी खिड़कियां खुली थीं और उनसे ऐसा मधुर संगीत बहता आ रहा था, जैसा व्यापारी ने पहले कभी न सुना था।

सीढ़ियां चढ़कर व्यापारी महल में गया, सीढ़ियों पर लाल मखमल बिछा था। अंदर कमरे में गया, देखा वहां कोई नहीं था, दूसरे, तीसरे कमरे में गया – वहां भी कोई नहीं, पांचवें, दसवें कमरे में भी कोई नहीं। सभी कमरों में राजसी सज्जा थी, जैसी व्यापारी ने कभी देखी न थी। यहां सोने-चांदी की, हीरे-मोतियों और रत्नों से जड़ी, हाथी दांत की बनी चीज़ें थीं।

भला व्यापारी ऐसा वैभव देखकर चकित-विस्मित था और इससे भी अधिक इस बात पर कि महल का स्वामी कहीं नहीं दिख रहा है; स्वामी ही नहीं, कोई नौकर-चाकर भी कहीं नहीं दिखाई देता है। और उधर मधुर से मधुर संगीत झंकृत हो रहा है। तभी उसने मन ही मन सोचा: "और तो सब अच्छा है, पर खाने को कुछ नहीं।" इतना सोचने की देर थी कि उसके सामने मेज़ लग गई, मेज़ पर सोने-चांदी के बर्तनों में नाना व्यंजन लगे हुए, भांति-भांति के पकवान तथा पेय सजे हुए। व्यापारी कुर्सी पर बैठ गया और फिर उसने जी भरकर खाया-पिया: खाना इतना स्वादिष्ट था कि उंगलियां चाटते रह जाओ। खाना खाकर व्यापारी उठा ही था कि मेज़ गायब हो गई, बस संगीत वातावरण को मधुरतम बनाये जा रहा था।

भला व्यापारी ऐसे कभी न सुने, कभी न देखे कौतुक पर चकित होता हुआ सजे-धजे कमरों को निहारने लगा और सोचने लगा: "अच्छा हो, थोड़ी देर
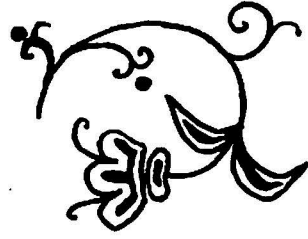
सो लूं," और देखता क्या है कि उसके सामने सोने का नक्काशीदार पलंग बिछा हुआ है, पाये उसके बिल्लौरी हैं, ऊपर चांदी का पर्दा है और उस पर मोतियों की झालर।

व्यापारी इस नये अजूबे पर दंग रह गया। ऊंचे पलंग पर लेटकर उसने चांदी का पर्दा बंद किया, पर्दा रेशम जैसा महीन और कोमल था। कमरे मे सांझ जैसा झुटपुटा हो गया, संगीत के स्वर अब कहीं दूर से आ रहे थे। व्यापारी के मन में आया: "हाय, सपने में ही अपनी बेटियों को देख लूं!" और उसी क्षण वह सो गया।

सुबह जो व्यापारी जागा, तो सूरज बहुत ऊपर चढ़ आया था। सारी रात वह अपनी प्यारी बेटियों को देखता रहा था: बड़ी और मंझली बेटियों को देखा कि वे हंसती-खेलती दिन बिता रही हैं, बस छोटी, लाड़ली बेटी ही उदास है; बड़ी और मंझली ने अपने लिए वर ढूंढ़ लिये हैं और पिता का आशीर्वाद पाये बिना ही विवाह रचना चाहती हैं; छोटी, लाड़ली बेटी जब तक उसके प्यारे पिता जी नहीं आ जाते, विवाह की बात सुनना ही नहीं चाहती। यह सब देखकर उसके मन में खुशी भी छाई और उदासी भी।

ऊंचे पलंग से वह उतरा, तो उसके लिए कपड़े तैयार रखे थे; स्नान के लिए फ़व्वारे से पानी की धार बिल्लौरी टब में पड़ रही थी। व्यापारी नहाया-धोया, कपड़े पहने और तब एक नया चमत्कार देखा: मेज़ पर चाय-काफ़ी लगी हुई थी, मिठाइयां सजी हुई थीं। भगवान का नाम लेकर उसने नाश्ता किया और फिर से कमरों का चक्कर लगाने लगा, ताकि दिन के प्रकाश में उनकी मनमोहक सज्जा निहार सके।

हरे संगमरमर की, ताम्रवर्णी मैलाकाइट की दूसरी सीढ़ियों से वह उतरा और सीधा हरे-भरे उपवन में जा पहुंचा। यहां घूमता हुआ वह बाग की मनोहर
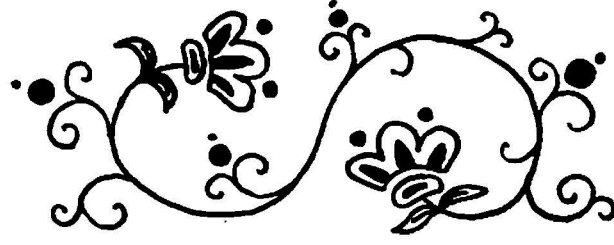
छटा देखने लगा : पेड़ों पर फल पक रहे थे, उन्हें देखकर मुंह में पानी आता था, जी करता था बस अभी तोड़कर खा लो ; अनोखे पंछी उड़ रहे थे – चहकते, कुहकते, कलरव करते मीठे गीत गा रहे थे ; फ़व्वारे ऊंची-ऊंची धारें छोड़ रहे थे, इतनी ऊंची कि सिर उठाकर देखो तो भी ऊपर तक न दिखें ; झरनों, सोतों का निर्मल जल कलकल करता बह रहा था।

इस अनुपम सौंदर्य पर विमुग्ध व्यापारी घूम रहा था, और तभी अचानक देखता क्या है कि एक छोटे से हरे टीले पर लाल रंग का फूल खिला हुआ है, इतना सुंदर कि न किसी ने सुना हो, न देखा हो, और शब्दों में वर्णन करने लगो, तो कर न सको। भले व्यापारी का दिल बांसों उछलने लगा। उस फूल की सुगंध सारे बाग में फैल रही थी। व्यापारी के हाथ-पांव कांपने लगे, हर्षविभोर हो वह बोला :

"यह रहा वह लाल फूल, जिससे सुंदर सारे संसार में और कोई नहीं। यही मेरी छोटी, मेरी लाड़ली बेटी ने मांगा था।"

और इतना कहकर उसने लाल फूल तोड़ लिया। उसी क्षण बिन बादलों के ही बिजली चमकी, ज़ोरों का गर्जन हुआ, पांवों तले धरती कांप उठी, और व्यापारी के सामने एक भयानक झबरीला जीव प्रकट हुआ, जो न पशु ही था, न मनुष्य ही। डरावनी आवाज़ में वह दहाड़ा :

"तुमने मेरे बाग में मेरा प्यारा फूल तोड़ने का दुस्साहस कैसे किया? मैं आंख के तारे की भांति इसकी रक्षा करता था और हर दिन इसे देख-देखकर खुश होता था। तुमने मेरे जीवन की सारी खुशी छीन ली है। मैंने तो प्यारे अतिथि की भांति तुम्हारा स्वागत किया, तुम्हें खिलाया, पिलाया, सुलाया और तुमने मेरी भलाई का बदला ऐसे चुकाया? तो सुन लो अपने भाग्य का फ़ैसला : इस अपराध के लिए तुम्हें भयानक मौत मरना होगा!.."
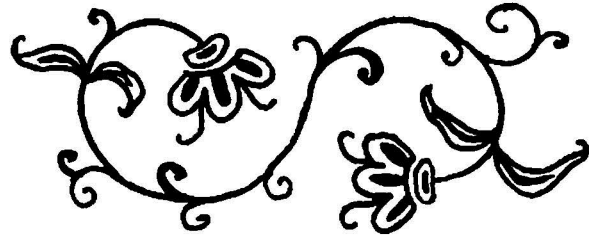
और चारों ओर से असंख्य कर्कश स्वर चीखे :

"भयानक मौत मरना होगा ! "

भले व्यापारी ने उस झबरीले डरावने जीव के सामने घुटने टेक लिये और दयनीय स्वर में बोला :

"हे, जादुई महल के स्वामी, तुम्हें वन्य दानव कहूं या समुद्री दैत्य कहूं, मैं नहीं जानता ! अनजाने में हुई भूल के लिए मेरी आत्मा को नरक की आग में मत धकेलो, मुझे सज़ा देने से पहले मेरी बात सुन लो ! मेरी तीन बेटियां, तीन सुंदर, गुणवती बेटियां हैं; उन्हें मैंने सौगात लाने का वचन दिया था : बड़ी बेटी के लिए रत्नों से जड़ा मुकुट, मंझली बेटी के लिए बिल्लौरी दर्पण, और छोटी बेटी के लिए ऐसा लाल फूल, जिससे सुंदर सारे संसार में कोई दूसरा न हो। बड़ी बेटियों की सौगातें तो मैंने ढूंढ़ लीं, पर छोटी बेटी की मनचाही चीज़ नहीं ढूंढ़ पा रहा था; तुम्हारे बाग में मैंने यह लाल फूल देखा, जिससे सुंदर और कोई फूल नहीं हो सकता, और मैंने सोचा कि ऐसी अपार सम्पदा के स्वामी, ऐसे महाशक्तिशाली स्वामी को यह छोटा सा फूल देकर दुख न होगा। मुझ नासमझ को क्षमा कर दो, मेरी प्यारी बेटियों के पास मुझे जाने दो और मेरी लाड़ली छोटी बेटी के लिए लाल फूल दे दो। इसके बदले मैं तुम्हें जितना कहोगे सोना दे दूंगा। "

जंगल में ऐसा अट्टहास गूंजा, जैसे बादल गरजा हो और वह वन्य दानव, समुद्री दैत्य व्यापारी से बोला :

"मुझे तुम्हारा सोना नहीं चाहिए : मेरा अपना भण्डार अथाह है। तुम्हारी जान बस एक शर्त पर बच सकती है। मैं तुम्हें सही-सलामत घर जाने दूंगा, अपार धन-दौलत दूंगा, लाल फूल भी भेंट कर दूंगा – बस तुम मुझे यह वचन दो कि अपने स्थान पर अपनी एक बेटी को भेज दोगे। मैं उसका दिल नहीं दुखाऊंगा
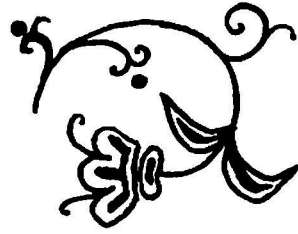
और वह मेरे महल में आदर-सम्मान से रहेगी। अकेले रहते-रहते मेरा मन उकता गया है, सो मैं अपने लिए कोई साथी पाना चाहता हूं।"

"हे, जादुई महल के स्वामी, वन्य दानव, समुद्री दैत्य! यदि मेरी बेटियां अपनी इच्छा से आने को तैयार न हुईं, तो मैं क्या करूंगा? और तुम्हारे महल तक पहुंचा भी कैसे जा सकता है? मैं स्वयं पूरे दो साल चलकर तुम्हारे पास पहुंचा हूं और किन रास्तों, किन मार्गों से आया हूं, यह मुझे पता नहीं।"

तब वन्य दानव, समुद्री दैत्य ने व्यापारी से कहा:

"तुम्हारी जो बेटी पिता के प्रति प्रेम की खातिर, अपनी इच्छा से आना चाहे, वही आये, और यदि कोई भी बेटी न आना चाहे, तो तुम स्वयं आना और फिर मैं तुम्हें भयानक मौत मार डालने का हुक्म दूंगा। मेरे पास आना कैसे होगा, इसकी तुम चिंता मत करो; मैं तुम्हें अपनी अंगूठी दूंगा: जो कोई भी उसे दायें हाथ की छोटी उंगली में पहनेगा, वह पलक झपकते ही जहां जाना चाहेगा, वहीं पहुंच जायेगा। मैं तुम्हें तीन रात, तीन दिन अपने घर पर बिताने की छूट देता हूं।"

व्यापारी गहरी सोच में पड़ गया, बहुत सोच-विचारकर उसने मन ही मन यह निश्चय किया: "घर जाकर अपनी बेटियों से तो मिल लूं, उन्हें अपना आशीर्वाद दे दूं और यदि वे मुझे मौत के मुंह से बचाना नहीं चाहेंगी, तो मैं धर्म-कर्म करके मरने के लिए तैयार होकर वन्य दानव, समुद्री दैत्य के पास लौट आऊंगा।" उसके मन में कोई खोट नहीं था, सो उसने सारी बात बता दी। वन्य दानव, समुद्री दैत्य पहले से ही उसके मन की बात जान गया था; व्यापारी की निष्कपटता देखकर उसने अपने हाथ से सोने की अंगूठी उतारी और व्यापारी को दे दी।

व्यापारी ने अंगूठी दायें हाथ की छोटी उंगली पर पहनी ही थी कि वह अपने
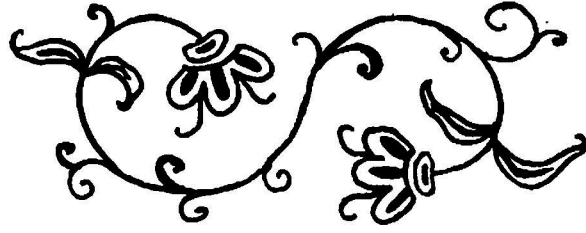
खुले अहाते के फाटक पर पहुंच गया। ठीक उसी समय उसके वफ़ादार नौकर माल से लदी गाड़ियां अहाते में ले जा रहे थे। घर में कोलाहल मच गया, बेटियां दौड़ी-दौड़ी पिता के पास आईं, उसके गले से लिपट गईं, लाड़-प्यार भरे शब्द कहने लगीं, दोनों बड़ी बेटियां छोटी से बढ़कर लाड़ जता रही थीं। वे देख रही थीं कि पिता जी खुश नहीं हैं, कि उनके मन पर कोई बोझ है। बड़ी बेटियां पिता से पूछने लगीं कि वह परदेस में अपनी धन-दौलत तो नहीं गंवा आये; पर छोटी बेटी धन-दौलत की बात सोच तक न रही थी, उसने पिता से कहा:

"मुझे आपकी धन-दौलत नहीं चाहिए; धन-दौलत तो हाथ की मैल है, आप तो मुझे यह बताइये कि आपके मन पर कौनसी चिंता का बोझ है।"

तब भले व्यापारी ने अपनी सुंदर और गुणवती बेटियों से कहा:

"मैंने अपनी अपार धन-दौलत गंवाई नहीं है, उसे तिगुना-चौगुना बढ़ाकर लौटा हूं; चिंता मेरे मन में कुछ और ही है, पर वह मैं कल बताऊंगा, आज हम खुशियां मनायेंगे।"

और फिर उसने अपना लोहे का संदूक लाने का हुक्म दिया। संदूक में से उसने बड़ी बेटी की सौगात निकाली–सोने का मुकुट; मंझली बेटी को बिल्लौरी दर्पण दिया और छोटी बेटी को सोने के फूलदान में रखा लाल फूल। बड़ी बेटियां खुशी से पागल हो उठीं। बस छोटी बेटी ही लाल फूल देखकर सिहर उठी और रोने लगी। बुझे मन से उसने फूल तो ले लिया, पर पिता के हाथ चूमती जाये और आंसू बहाती जाये।

सांझ हुई तो मेहमान आने लगे, व्यापारी का सारा घर प्यारे मेहमानों से, सगे-संबंधियों से, रिश्ते-नातेवालों से भर गया। आधी रात तक मेहमानों से बातें होती रहीं और ऐसी वहां दावत हुई, जैसी भले व्यापारी ने अपने घर में
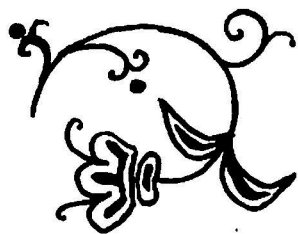
पहले कभी भी न देखी थी, उसकी समझ में ही न आता था कि कहां से क्या आ रहा है, और सब लोग भी इस पर हैरान थे: बर्तन सोने-चांदी के थे, नये-नये, अनोखे व्यंजन, पकवान और पेय थे, जैसे व्यापारी के घर में पहले कभी भी न पके थे, न बने थे।

सुबह हुई तो व्यापारी ने बड़ी बेटी को बुलाया, उसे सारी आपबीती सुनाई और फिर पूछा: क्या वह अपने पिता को भयानक मौत से बचाने के लिए वन्य दानव, समुद्री दैत्य के यहां जाने को तैयार है? बड़ी बेटी ने साफ़ इन्कार कर दिया, बोली:

"जिस बेटी के लिए आप लाल फूल लेने गये थे, वही आपको बचाये।"

भले व्यापारी ने मंझली बेटी को बुलाया, उसे भी अपनी सारी आपबीती सुनाई और फिर पूछा कि क्या वह पिता को भयानक मौत से बचाना चाहती है। मंझली बेटी ने साफ़ इन्कार कर दिया और बोली:

"जिस बेटी के लिए आप लाल फूल लेने गये थे, वही आपको बचाये।"

फिर भले व्यापारी ने छोटी बेटी को बुलाया और उसे सब कुछ बताने लगा। अभी वह अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि छोटी, लाड़ली बेटी ने घुटने टेककर कहा:

"परम पूज्य मेरे पिता जी, मुझे आशीर्वाद दीजिये: मैं वन्य दानव, समुद्री दैत्य के यहां जाऊं, उसके महल में रहूं। आप मेरे लिए फूल लाये हैं, अब मुझे आपको इस विपदा से बचाने दीजिये।"

भले व्यापारी के आंसू बहने लगे, अपनी छोटी, लाड़ली बेटी को उसने छाती से लगाया और कहने लगा:

"मेरी प्यारी बेटी, मेरी सुंदर और गुणवती, मेरी छोटी, मेरी लाड़ली बेटी, मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ रहेगा, तुम अपने पिता को भयानक

मौत से बचा रही हो और अपनी इच्छा से वन्य दानव, समुद्री दैत्य के यहां जीने जा रही हो। वहां तुम महल में, राजाओं-महाराजाओं से भी अधिक आराम से रहोगी ; पर वह महल कहां है — इसका पता किसी को नहीं और वहां तक जाने का कोई रास्ता नहीं। हमें तुम्हारा कोई समाचार नहीं, कोई खबर नहीं मिलेगी, और न तुम्हें ही हमारा कुछ पता रहेगा। कैसे मैं अभागा, तुम्हारा मुखड़ा देखे बिना, तुम्हारी प्यार भरी बातें सुने बिना अपने दुख भरे दिन काट सकूंगा ? "

और तब छोटी, लाड़ली बेटी ने पिता से कहा :

"परम पूज्य मेरे पिता जी, दुखी मत होइये, रोइये नहीं। वहां मुझे हर तरह का आराम होगा, मैं वन्य दानव, समुद्री दैत्य से डरूंगी नहीं, सच्चे मन से उसकी सेवा करूंगी, अपने स्वामी की हर इच्छा पूरी करूंगी और हो सकता है, उसे मुझ पर दया आ जाये। अभी से मेरे जीते जी ही क्यों ऐसे रोते हैं,

जैसे मैं मर ही गई हूं : हो सकता है, भगवान करे मैं लौट ही आऊं।"

भला व्यापारी फूट-फूटकर रोता जाता था, बेटी की ऐसी बातों से उसे कोई सांत्वना नहीं मिल रही थी।

तीसरा दिन बीत गया और तीसरी रात भी बीत गई, बिछुड़ने का समय आ गया, भले व्यापारी को अपनी छोटी, लाड़ली बेटी को विदा करना था; आंसू बहाते हुए उसने बेटी को दुलारा, दिल से लगाकर प्यार दिया और फिर वन्य दानव, समुद्री दैत्य की अंगूठी निकालकर अपनी छोटी, अपनी लाड़ली बेटी के दायें हाथ की छोटी उंगली में पहनाई। और उसी क्षण वहां न बेटी रही, न उसकी चीज़ें।

बेटी ने अपने को वन्य दानव, समुद्री दैत्य के ऊंचे, भव्य महल में पाया और वह महल के सारे कमरे देखने चल दी। बड़ी देर तक वह कमरों के चक्कर लगाती रही, विचित्र-विचित्र चमत्कारों को देखकर आश्चर्यचकित होती रही;
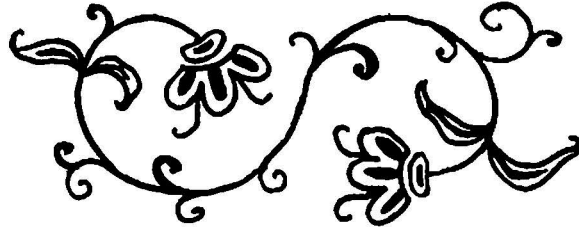
सभी कमरे एक से एक अधिक सुंदर थे। उसने वह सुनहरी फूलदान उठाया, जिसमें उसका प्यारा लाल फूल रखा हुआ था और हरे-भरे बाग में गई। बाग में उसने पांव रखा ही था कि पंछी मधुर कलरव करने लगे, फूल, पौधे और वृक्ष अपने शिखर हिलाने लगे, मानो उसका स्वागत कर रहे हों; फ़व्वारों की धारें और भी ऊंचे उठने लगीं, झरने, सोतों का कलकल बढ़ गया; छोटी बेटी ने वह ऊंचा स्थान ढूंढ़ लिया, जहां भले व्यापारी ने वह लाल फूल तोड़ा था, जिससे सुंदर सारे संसार में और कोई नहीं था। उसने सुनहरी फूलदान में से लाल फूल निकाला, ताकि उसे फिर से पहले वाली जगह पर लगा दे, पर वह फूल स्वयं उसके हाथों में से निकल गया, पहले वाले डंठल पर लग गया, और पहले से भी अधिक सुंदर हो गया।

कभी न सुनें, कभी न देखे इस कौतुक पर वह विस्मित हुई, अपने मनचाहे लाल फूल को पहले से भी अधिक खिला देखकर हर्षविभोर हुई और फिर से महल में चली गई। महल के एक कमरे में मेज़ लगी हुई थी। व्यापारी की बेटी ने मन ही मन सोचा: "लगता है, वन्य दानव, समुद्री दैत्य मुझ पर क्रुद्ध नहीं है, और वह मेरा दयालु स्वामी होगा", तभी देखती क्या है कि सफ़ेद संगमरमर की दीवार पर आग से लिखे ये शब्द प्रकट हुए:

"मैं तुम्हारा स्वामी नहीं, मैं तो तुम्हारा विनम्र दास हूं। तुम मेरी स्वामिनी हो, और तुम्हारी जो भी इच्छा होगी, तुम्हारे मन में जो भी कामना आयेगी, उसे मैं सहर्ष पूरा करूंगा।"

उसने आग से लिखे ये शब्द पढ़े और वे मिट गये, सफ़ेद संगमरमर की दीवार फिर वैसी की वैसी हो गई, मानो उस पर वे शब्द प्रकट हुए ही न हों। और तब व्यापारी की बेटी के मन में आया कि वह अपने पिता को पत्र लिखे, उन्हें अपना कुशल समाचार भेजे। उसके यह सोचने की देर थी कि उसे सामने
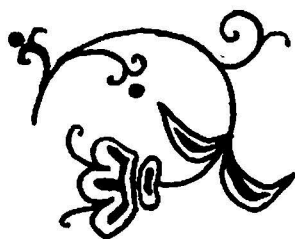
मेज़ पर कागज़ रखा दिखा, पास ही सोने की कलम और स्याहीदान भी रखा था। और वह अपने प्यारे पिता को, प्यारी बहनों को पत्र लिखने लगी :

"मेरे लिए दुखी मत हों, रोयें-कलपें नहीं, मैं वन्य दानव, समुद्री दैत्य के महल में राजकुमारी की भांति रह रही हूं ; उसे तो मैंने देखा नहीं, न उसकी आवाज़ ही सुनी है, हां सफ़ेद संगमरमर की दीवार पर वह अपना संदेश आग से लिखता है ; और वह मेरा स्वामी नहीं कहलाना चाहता, मुझे ही अपनी स्वामिनी कहता है।"

उसने पत्र पूरा किया ही था कि वह उसके हाथों से निकल गया, उसकी आंखों से लुप्त हो गया, मानो वह कभी वहां था ही नहीं। पहले से भी अधिक मधुर संगीत गूंजने लगा, मेज़ पर नाना व्यंजन, भांति-भांति के पकवान और पेय लग गये। सारे बर्तन कुंदन के थे। व्यापारी की बेटी खुशी-खुशी खाना खाने बैठी, हालांकि पहले कभी भी उसने अकेले खाना न खाया था ; जी भरकर खाया-पिया उसने, स्वादिष्ट भोजन का मज़ा, मधुर संगीत का आनन्द लिया। खाना खाकर वह फिर से हरे-भरे बाग में घूमने गई, क्योंकि खाने से पहले आधा बाग भी न देख पाई थी, उसके सारे अजूबों को उसने आंख भर न देखा था। सभी फूल, पौधे और वृक्ष उसके सामने शीश नवा रहे थे, पके-पके फलों – नाशपातियों, आड़ुओं, सेबों से लदी टहनियां उसके सामने झुक-झुक जाती थीं, रसदार फल मानो मुंह में टपके पड़ते थे। दिन ढले तक वह घूमती रही और फिर महल में लौटी। देखती क्या है कि मेज़ लगी हुई है, व्यंजनों, पकवानों से सजी हुई है।

खाना खाकर वह सफ़ेद संगमरमर के उस कमरे में गई, जहां उसने आग से लिखे शब्द पढ़े थे, और फिर से वहां ये शब्द पढ़े :
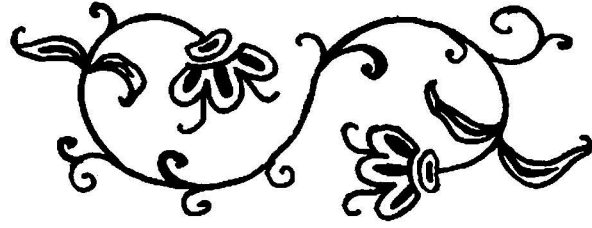
"क्या मेरी स्वामिनी अपने बाग और महल से, अपने भोजन और सेवकों से संतुष्ट है?"

व्यापारी की बेटी, अनुपम सुंदरी हर्षमय स्वर में बोली:

"आप मुझे स्वामिनी न कहें, आप सदा मेरे उदार, दयालु और स्नेही स्वामी रहें। मैं आपकी आभारी हूं कि इतना स्वादिष्ट भोजन कराया। आपके ऊंचे महल और हरे-भरे बागों से अधिक सुंदर महल और बाग दूसरा कोई नहीं है। और मैं संतुष्ट कैसे न होऊं? ऐसे चमत्कार, ऐसे कौतुक मैंने पहले कभी नहीं देखे, बस मुझे अकेले सोते डर लगता है; आपके महल में कहीं एक भी व्यक्ति दिखाई नहीं देता।"

तब दीवार पर आग से ये शब्द लिखे गये:

"मेरी अनुपम स्वामिनी, डरो नहीं: तुम अकेली नहीं सोओगी, तुम्हारी चहेती चेरी तुम्हारी सेवा के लिए आ गई है; और महल में भी अनेक लोग हैं, बस तुम उन्हें देखती नहीं हो, उनकी आवाज़ें नहीं सुनती हो; वे सब मेरे साथ दिन-रात तुम्हारी रक्षा करते हैं।"

तब व्यापारी की बेटी अपने शयनकक्ष में सोने गई। वहां पहुंचकर देखती क्या है कि पलंग के पास ही उसकी चहेती चेरी खड़ी है, डर के मारे उसके प्राण सूख रहे हैं; अपनी स्वामिनी को देखकर वह खुश हो उठी, उसके गोरे हाथ चूमने लगी, उसकी फुर्तीली टांगों से लिपटने लगी। व्यापारी की बेटी भी उसे देखकर खुश थी, अपने प्यारे पिता, अपनी बड़ी बहनों और अपनी सभी दासियों-चेरियों का कुशल समाचार पूछने लगी; और फिर स्वयं उसे बताने लगी कि इस बीच उसके साथ क्या-क्या हुआ है, पौ फटने तक दोनों सोईं नहीं।

सो बस भले व्यापारी की बेटी, सुंदर और गुणवती युवती ऐसे ही रहने
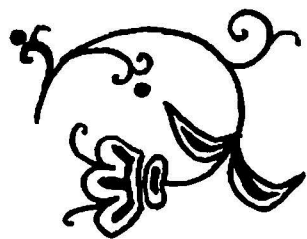
लगी। हर दिन उसके लिए नये-नये, अमूल्य वस्त्र तैयार होते, इतने सुंदर, इतने सजीले कि कहे न कहा जाये, लिखे न लिखा जाये। हर दिन उसके लिए नये-नये मनोरंजन तैयार होते: बिना घोड़ों के रथों में वह घने, अंधेरे जंगलों में सवारी करती और उन घने, बीहड़ जंगलों में रथ के सामने साफ़, सपाट रास्ता बनता जाता, और सारा समय संगीत गुंजायमान होता रहता। व्यापारी की बेटी कशीदे का, सिलाई-कढ़ाई का काम करने लगी: सोने, चांदी के तारों से कढ़ाई करती, मोतियों की फुंदियां बनाती। अब वह अपने प्यारे पिता को सुंदर-सुंदर चीज़ें भेंट में भेजने लगी और सबसे सुंदर कढ़ाई उसने अपने स्नेही स्वामी को भेंट की। दिन में कई-कई बार वह सफ़ेद संगमरमर के कमरे में जाने लगी, वहां अपने दयालु स्वामी से मीठी-मीठी बातें करती और दीवार पर आग से लिखे उसके स्नेहभरे शब्द पढ़ती।

न जाने कितना समय ऐसे बीत गया: कहानी ही जल्दी कही जाती है, काम तो जल्दी नहीं होता। और व्यापारी की सुंदर, गुणवती बेटी अपने इस जीवन की आदी होने लगी, अब उसे किसी चमत्कार, किसी कौतुक पर आश्चर्य न होता, वह किसी बात से न डरती। और अपने दयालु स्वामी से भी उसे दिन पर दिन अनुराग होता जा रहा था, वह देख रही थी कि वह अकारण ही उसे स्वामिनी नहीं कहता, उसे अपने से भी बढ़कर चाहता है। अब उसके मन में यह इच्छा जागी कि वह अपने स्वामी की आवाज़ सुने, कि सफ़ेद संगमरमर के कमरे में जाये बिना, आग से लिखे शब्द पढ़े बिना ही उससे बातचीत कर सके।

सो व्यापारी की बेटी उससे यह अनुरोध करने लगी, अनुनय-विनय करने लगी, पर वन्य दानव, समुद्री दैत्य नहीं मान रहा था, उसे डर था कि उसकी आवाज़ सुनकर वह भयभीत हो जायेगी; आखिर व्यापारी की बेटी ने अपने
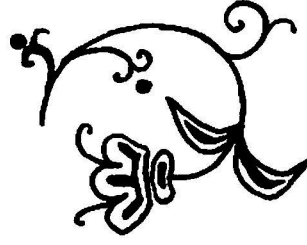
स्नेही स्वामी को मना ही लिया, वह उसकी इच्छा को टाल नहीं सकता था, और अंतिम बार उसने संगमरमर की दीवार पर आग से ये शब्द लिखे:

"आज हरे-भरे बाग में आना, अपने प्यारे लता-मण्डप में जा बैठना और कहना: 'मेरे सच्चे दास, मुझसे बातें करो'।"

व्यापारी की रूपवती बेटी दौड़ी-दौड़ी बाग में गई, अपने प्यारे लता-मण्डप में बैठ गई और कहने लगी:

"मेरे उदार, मेरे स्नेही स्वामी, डरिये नहीं कि मैं आपकी आवाज़ से भयभीत हो जाऊंगी: आपने मुझे इतना स्नेह दिया है, मुझ पर इतना उपकार किया है कि यह सब पाकर मैं जानवर की चिंघाड़ से भी नहीं डरूंगी; आप अपनी आशंका मन से निकाल दें और मुझ से बातें करें।"

और तभी उसने सुना जैसे लता-मण्डप के पीछे किसी ने उसास ली हो, और फिर बड़ी भयानक, कर्कश, फटी-फटी, भारी आवाज़ गूंजी, हालांकि वह दबे स्वर में ही बोला था। व्यापारी की बेटी, अनुपम सुंदरी पहले तो वन्य दानव, समुद्री दैत्य की आवाज़ सुनकर ठिठक गई, पर फिर उसने अपने डर पर काबू पा लिया और यह पता ही नहीं चलने दिया कि वह भयभीत हुई है। और फिर वह अपने स्वामी की प्यार-स्नेह भरी बातें, बुद्धिमत्ता भरी बातें सुनने में मगन हो गई और उसका मन खिल उठा।

बस उस दिन, उस क्षण से वे सारा-सारा दिन बातें करने लगे। हरे-भरे बाग में घूमते हुए, घने जंगल में बिना घोड़े के रथ पर सैर करते हुए और ऊंचे महल में टहलते हुए दोनों बातें करते रहते। भले व्यापारी की सुंदर गुणवती बेटी जब भी पूछती:

"मेरे उदार, मेरे प्यारे स्वामी, क्या आप यहां हैं?"

तभी वन्य दानव, समुद्री दैत्य उत्तर देता:

"यहीं है तुम्हारा दास, तुम्हारा सच्चा मित्र, मेरी अनुपम स्वामिनी।"

व्यापारी की बेटी को उसकी कर्कश, भोंडी आवाज़ से डर न लगता, और वे दोनों मीठी-मीठी बातें करने में मगन हो जाते।

और इस तरह न जाने कितना समय बीत गया जब व्यापारी की सुंदर, गुणवती बेटी के मन में यह इच्छा जागी कि वह वन्य दानव, समुद्री दैत्य को अपनी आंखों देखे और वह उससे इसका अनुरोध करने लगी, उसे मनाने लगी। पर वह किसी तरह मानता ही न था, डरता था कि व्यापारी की बेटी उसे देखकर भयभीत हो जायेगी, था भी तो वह इतना डरावना, इतना भयानक कि कहे न कहा जाये, लिखे न लिखा जाये। वन्य दानव, समुद्री दैत्य व्यापारी की बेटी की मिन्नतों के जवाब में कहता:

"मेरी अनुपस स्वामिनी, रूप की रानी, इस बात का अनुरोध मत करो कि मैं तुम्हें अपना वीभत्स चेहरा, अपनी कुरूप काया दिखाऊं। मेरी आवाज़ की तो तुम आदी हो गई हो: हम दोनों मित्रों की भांति मेल-मिलाप से रह रहे हैं, दिन भर साथ ही रहते हैं, और मेरे वर्णनातीत प्रेम के कारण हीं तुम मुझे चाहने लगी हो, पर मेरा भयानक, वीभत्स रूप देखकर तुम मुझ अभागे से घृणा करने लगोगी, मुझे अपनी आंखों से दूर भगा दोगी, और मैं तुम्हारा वियोग नहीं सह सकूंगा।"

व्यापारी की सुंदर, गुणवती बेटी उसकी ये बातें नहीं सुनती थी, वह पहले से भी अधिक अनुनय-विनय करती, मिन्नतें करती, सौगंध खाती कि स्वामी कितना भी डरावना क्यों न हो वह उससे नहीं डरेगी, कि अपने उदार, सहृदय स्वामी की ओर से कभी मन नहीं मोड़ेगी।

बहुत दिनों तक वन्य दानव, समुद्री दैत्य नहीं माना, पर आखिर कब तक वह अपनी रूपवती की मिन्नतों को, उसके आंसुओं को अनसुना, अनदेखा
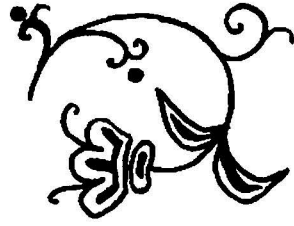
करता, वह उसका कहा कब तक टालता, सो एक दिन बोला:

"मैं तुम्हारा कहा नहीं टाल सकता, क्योंकि अपने से बढ़कर तुम्हें चाहता हूं; मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूंगा, हालांकि जानता हूं कि यह मेरे सुख का अंत होगा और इससे मुझे असमय ही मरना होगा। दिन ढले जब सूरज जंगल के पीछे छिप जायेगा, झुटपुटा छा जायेगा, तो तुम हरे-भरे बाग में आना और कहना: 'मेरे सच्चे मित्र, मेरे सामने आओ!' और मैं तुम्हें अपना घिनौना चेहरा, अपनी कुरूप काया दिखा दूंगा। यदि फिर तुम मेरे यहां न रहना चाहो, तो मैं तुम्हें बांधकर नहीं रखूंगा, जीवन भर के लिए दुखी न करूंगा: अपने पलंग पर सिरहाने तले तुम्हें मेरी सोने की अंगूठी मिलेगी। उसे अपने दायें हाथ की छोटी उंगली पर पहनते ही तुम पिता जी के घर पहुंच जाओगी और फिर कभी मेरे बारे में कुछ नहीं सुनोगी।"

व्यापारी की सुंदर, गुणवती बेटी डरी नहीं, भयभीत नहीं हुई, उसे अपने पर पूरा विश्वास था। उसी क्षण, पल भर की भी देर किये बिना वह हरे-भरे बाग में चली गई और वहां उस घड़ी की प्रतीक्षा करने लगी, जब दिन ढलेगा, सूरज डूबेगा और झुटपुटा छायेगा।और जब वह घड़ी आ गई तो उसने पुकारा: "मेरे सच्चे मित्र, मेरे सामने आओ!" और वह वन्य दानव, समुद्री दैत्य दूर से उसे दिखा: वह बस पगडंडी पार करके घनी झाड़ियों में छिप गया; और बस व्यापारी की सुंदर, गुणवती बेटी की आंखों के आगे अंधेरा छा गया, गोरी-गोरी बांहें ऊंची उठाकर वह चीखी और बेहोश होकर गिर पड़ी।

जाने कितनी देर वह बेहोश पड़ी रही और जब उसे होश आया, तो उसने सुना कि उसके पास ही कोई रो रहा है, आंसू बहा रहा है और दयनीय स्वर में कहता जा रहा है:

"हाय, मेरी प्यारी सुंदरी, तुमने तो मुझे कहीं का न छोड़ा, अब मैं कभी
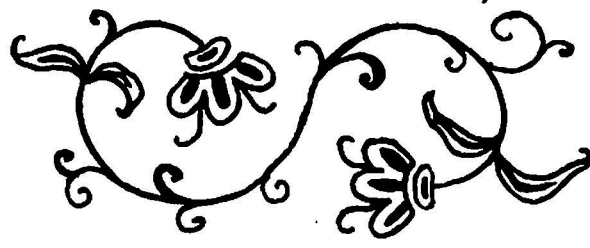
तुम्हारा सलोना मुखड़ा न देख पाऊंगा और मुझे असमय ही मरना होगा।"

व्यापारी की बेटी ने अपने डर को दबाया, अपना कोमल हृदय दृढ़ किया और शांत स्वर में बोली:

"नहीं, मेरे उदार, मेरे स्नेही स्वामी। आप डरिये नहीं, अब मैं आपके भयावह रूप से डरूंगी नहीं, आपको छोड़कर नहीं जाऊंगी, आपके उपकार नहीं भूलूंगी; फिर से मेरे सामने प्रकट हो जाओ; मैं पहली बार ही डर गई थी।"

वन्य दानव, समुद्री दैत्य अपने भयानक, घिनौने, वीभत्स रूप में प्रकट हुआ; हां, व्यापारी की बेटी के बहुत कहने पर भी वह उसके पास नहीं गया। अगले दिन उसने वन्य दानव, समुद्री दैत्य को सूरज के प्रकाश में देखा, उसका वीभत्स रूप देखकर वह शुरू में डरी तो, पर उसने अपना डर प्रकट नहीं होने दिया और फिर उसका भय बिल्कुल ही जाता रहा। और फिर वे पहले से भी अधिक घुल-मिलकर बातें करने लगे: सारा-सारा दिन वे दोनों साथ रहते, मिलकर खाना खाते, अच्छे-अच्छे पकवानों का मज़ा चखते, हरे-भरे बाग में घूमने का, घने वन में बिना घोड़ों के रथ पर सवारी का आनन्द लेते।

और इस तरह बहुत समय बीत गया, कहानी ही जल्दी कही जाती है, काम तो जल्दी नहीं होता। और एक दिन व्यापारी की सुंदर बेटी ने सपना देखा कि उसके पिता जी अस्वस्थ हैं, और यह सपना देखकर वह बहुत ही उदास हो गई। उसे उदास देखकर वन्य दानव, समुद्री दैत्य भी दुखी हुआ और पूछने लगा कि वह क्यों उदास है, क्यों आंसू बहा रही है। तब व्यापारी की बेटी ने उसे अपना बुरा सपना सुनाया और उससे आज्ञा मांगी कि वह उसे जाने दे, ताकि वह अपने पूज्य पिता और प्यारी बहनों से मिल आये। इस पर वन्य दानव, समुद्री दैत्य ने कहा:
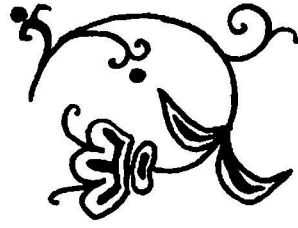
"तुम्हें मेरी आज्ञा की क्या ज़रूरत है? मेरी सोने की अंगूठी तुम्हारे पास है, उसे दायें हाथ की छोटी उंगली पर पहन लो और तुम अपने पिता जी के घर पहुंच जाओगी। जब तक तुम्हारा मन उदास न हो, वहां रहना, हां, बस इतना मैं कहता हूं कि यदि ठीक तीन दिन और तीन रातों के बाद तुम न लौटीं, तो मैं इस संसार में न रहूंगा, उसी क्षण मैं मर जाऊंगा, क्योंकि तुम्हें अपने से भी अधिक प्रेम करता हूं और तुम्हारे बिना जी नहीं सकता।"

व्यापारी की बेटी उसे शपथ खाकर वचन देने लगी कि तीन दिन और तीन रात पूरे होने से एक घंटा पहले ही वह लौट आयेगी। अपने दयालु और स्नेही स्वामी से उसने विदा ली, दायें हाथ की छोटी उंगली में अंगूठी पहनी और उसी क्षण अपने को अपने पिता, भले व्यापारी के अहाते में खड़ा पाया।

सब से गले लगकर वह मिली, पिता और बहनों से लाड़-दुलार लिया। फिर वह वन्य दानव, समुद्री दैत्य के यहां बिताये अपने दिनों के बारे में बताने लगी, सारी बातें उसने बता दीं, कुछ भी नहीं छिपाया। भला व्यापारी बहुत खुश हुआ कि उसकी छोटी, लाड़ली बेटी इतने राजसी ठाठ से रहती है और उसे आश्चर्य हुआ कि वह अपने भयावह स्वामी को देखने की आदी हो गई है और वन्य दानव, समुद्री दैत्य से नहीं डरती। उधर बड़ी बहनों को तो यह सुनकर ईर्ष्या ही होने लगी कि छोटी बहन के पास कैसी अथाह सम्पदा है और कैसे उसका स्वामी उसकी हर इच्छा पूरी करता है, उसे ही अपनी स्वामिनी मानता है।

एक दिन एक घंटे जैसा बीत गया, दूसरा दिन एक मिनट सा बीत गया, और तीसरे दिन बड़ी बहनें छोटी बहन को मनाने लगीं कि वह वन्य दानव, समुद्री दैत्य के पास न लौटे। "मरने दो उसे, ऐसे भयानक दैत्य को तो मर ही

जाना चाहिए..." यह सुनकर छोटी बहन को बड़ी बहनों पर बड़ा गुस्सा आया और वह बोली:

"यदि मैं अपने उदार और स्नेही स्वामी के सारे उपकारों का, उसके प्रगाढ़, वर्णनातीत प्रेम का यह बदला चुकाऊं कि उसकी भयानक मौत का कारण बनूं, तो मैं इस संसार में जीने लायक ही नहीं, तब तो मुझे भूखे जंगली जानवरों के सामने डाल देना चाहिए।"

उसके पिता, भले व्यापारी ने ऐसे शब्दों के लिए उसे शाबाशी दी और यह तय हुआ कि तीन दिन, तीन रात पूरे होने से ठीक एक घंटा पहले छोटी, लाड़ली बेटी, सुंदर और गुणवती बेटी वन्य दानव, समुद्री दैत्य के पास लौट जाये। यह सुनकर बड़ी बहनों को घोर निराशा हुई और उन्होंने धूर्तताभरी चाल चलने की सोची: घर की सारी घड़ियां उन्होंने एक घंटा पीछे कर दीं।

और जब वास्तव में चलने का समय हुआ, तो व्यापारी की छोटी, लाड़ली बेटी, अनुपम सुंदरी के दिल में टीस उठने लगी, उसका मन करे बस अभी उठकर

चल दे, वह बार-बार पिता की घड़ियां देखती, विलायती और जर्मन घड़ियां, पर घड़ियों में अभी समय नहीं हुआ था। उधर बहनें उसे बातों में लगा रही थीं, कभी कुछ और कभी कुछ पूछते हुए उसे रोक रही थीं। आखिर उसका मन न माना। छोटी, लाड़ली बेटी, अनुपम सुंदरी ने भले व्यापारी से, अपने प्यारे पिता से विदा ली, बड़ी बहनों से विदा ली और निर्धारित समय से एक मिनट पहले सोने की अंगूठी दायें हाथ की छोटी उंगली पर पहन ली और वन्य दानव, समुद्री दैत्य के ऊंचे महल में पहुंच गई। वह हैरान थी कि वह उसका स्वागत नहीं कर रहा, सो ज़ोर से पुकारने लगी:

"मेरे उदार स्वामी, मेरे सच्चे मित्र कहां हैं आप? मेरा स्वागत क्यों नहीं कर रहे? मैं तो तीन दिन, तीन रात पूरे होने से ठीक एक घंटा, एक मिनट पहले आई हूं।"
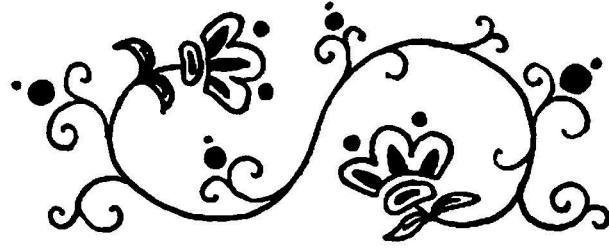
लेकिन उसे कोई उत्तर नहीं मिला, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। व्यापारी की बेटी, अनुपम सुंदरी का हृदय कांप उठा, उसे अनिष्ट की आशंका हुई। दौड़ी-दौड़ी वह उस टीले पर गई, जहां उसका प्यारा लाल फूल उगा हुआ था, और देखती क्या है कि वन्य दानव, समुद्री दैत्य अपने बेहूदे, झबरीले पंजों से लाल फूल पकड़े टीले पर लेटा हुआ है। उसे लगा कि वह उसकी बाट जोहते-जोहते सो गया है, और गहरी नींद सो रहा है।

व्यापारी की बेटी, अनुपम सुंदरी उसे हौले-हौले जगाने लगी, पर वह नहीं जाग रहा था, तब वह उसे ज़ोर से झकझोरने लगी, उसका झबरीला पंजा पकड़ा और तब देखा कि वन्य दानव, समुद्री दैत्य वहां निष्प्राण पड़ा हुआ है...

व्यापारी की बेटी, अनुपम सुंदरी की आंखों आगे अंधेरा छा गया, उसकी फुर्तीली टांगें निश्शक्त हो गईं, वह घुटनों के बल गिर पड़ी, अपनी गोरी बांहों में दयालु स्वामी का सिर भरा—कुरूप और घिनौना सिर; और मर्माहत स्वर में चीखी:

"उठो, जागो, मेरे प्यारे, तुम तो मेरे चहेते वर हो!"

उसके मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि चारों ओर बिजलियां चमकने लगीं, ऐसा गर्जन हुआ कि धरती कांप उठी, कड़कड़ाती बिजली टीले पर गिरी, और व्यापारी की लाड़ली बेटी, अनुपम सुंदरी बेहोश होकर गिर पड़ी। न जाने कितनी देर वह बेहोश रही, और जब होश में आई, तो देखती क्या है कि वह सफ़ेद संगमरमर के ऊंचे महल में हीरे, मोतियों और रत्नों से जड़े सोने के सिंहासन पर बैठी है और उसके बगल में अतिसुंदर राजकुमार बैठा है।

मुकुटधारी राजकुमार उससे कहने लगा:

"मेरी अनुपम सुंदरी, मेरे उदार हृदय और तुम्हारे प्रति प्रेम के लिए तुमने कुरूप-भयानक दानव के रूप में मुझसे प्यार किया; अब मनुष्य के रूप में

भी मुझे स्वीकार करो ; मेरी चहेती वधू बनो। मेरे पिता, यशस्वी और शक्तिशाली राजा पर एक दुष्ट जादूगरनी का कोप हुआ, उसने मुझे चुरा लिया और अपने काले जादू से मुझे डरावना जीव बना दिया। और उसने यह शाप दिया कि यह जादू तभी दूर होगा, जब कोई युवती इस रूप में ही मुझसे प्रेम करने लगेगी और मेरी पत्नी बनना चाहेगी। जब ऐसी कोई युवती मिल जायेगी, तब सारा जादू दूर हो जायेगा और मैं पहले की ही भांति मनुष्य बन जाऊंगा – जवान और सुंदर। पूरे तीस साल तक मैं इस भयानक रूप में रहा। इस बीच मैंने ग्यारह सुंदर युवतियों को अपने जादुई महल में बुलाया। तुम बारहवीं थीं। उनमें से एक ने भी मेरे सारे स्नेह, मेरी उदारता के लिए मुझसे प्रेम नहीं किया। बस तुमने ही मेरे स्नेह और सेवाओं के लिए, मेरे उदार हृदय के लिए, तुम्हारे प्रति मेरे प्रगाढ़ प्रेम के लिए मुझ भयावह दैत्य से प्रेम किया, सो अब तुम यशस्वी राजा की पत्नी, शक्तिशाली राज्य की रानी बनोगी।"

С. Аксаков
АЛЕНЬКИЙ ЦВЕТОЧЕК
На языке хинди

S. Aksakov
THE LITTLE SCARLET FLOWER
In Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित